

To  
The Board of Studies,  
S.D.Mahila Mahavidyalya,  
Narwana.

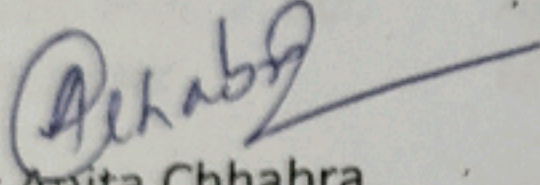
**Sub: Approval for "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" Certificate course.,**

Respected Madam,

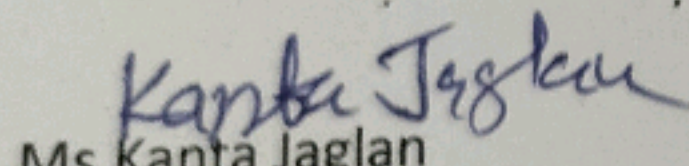
We want to start a certified offline course "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" (30 Hours) in our campus. A Certificate is an education goal for many students who want to improve their visibility among aggressive job applications. Certificates may help to provide students with increased skills and experience. Syllabus of "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" is attached with this application. Please kindly approve this certified course. We shall be thankful to you for this.

Enclosed: Syllabus of the Certificate Course.

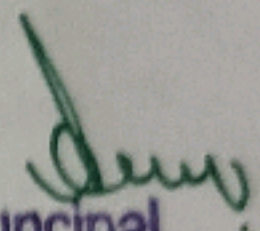
Yours Faithfully



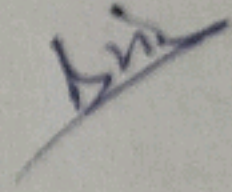
Dr. Anita Chhabra  
Asstt. Prof. of Hindi.



Ms. Kanta Jaglan  
Asstt. Prof. of Hindi



Principal  
S.D. Mahila Mahavidyalya  
Narwana



Dr. Anita Chhabra  
Asst. Prof. of Hindi

Ms. Kanta Jaglan  
Asst. Prof. of Hindi

Subject: Approval for "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" by the Board of Studies

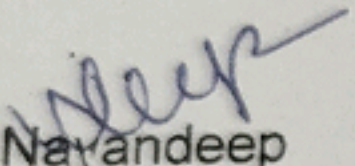
Dear Ms. Nisha & Mahak,

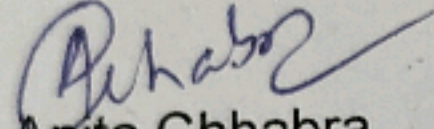
I am pleased to inform you that after careful consideration and review by the Board of Studies, has approved "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" which spans over 30+ hours of instruction.

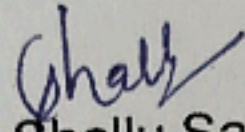
This course has been evaluated thoroughly to ensure its alignment with our institution's academic standards and objectives. We believe that it will significantly contribute to the academic enrichment of our students and align with our commitment to providing high-quality education.

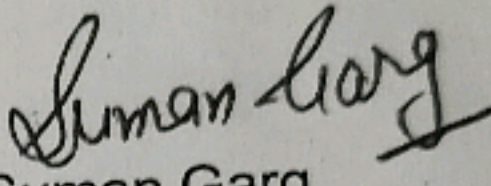
Thank you for your interest and support in our academic endeavors.

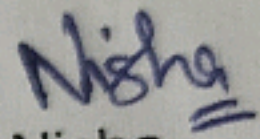
Yours sincerely,

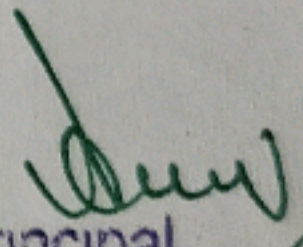
  
Dr. Nayandeep  
Assoc. Prof. in Eco.  
Convener

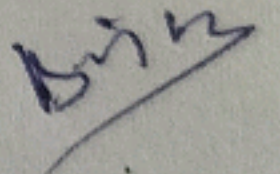
  
Dr. Anita Chhabra  
Asst. Prof. in Hindi  
Member

  
Dr. Shallu Sachdeva  
Asst. Prof. in Hist.  
Member

  
Suman Garg  
Asst. Prof. in Eng.  
Member

  
Nisha  
Asst. Prof. in Physics  
Member

  
Principal  
S.D. Mahila Mahavidyalaya  
Narwana





सनातन धर्म महिला महाविद्यालय  
नरवाना (जींद)



के  
हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित  
सर्टिफिकेट कोर्स

हरियाणवी संस्कृति में सांग  
लोकगीत एवं रागनी

प्रमाणपत्र: कोर्स समापन पर सफलतापूर्वक प्राप्त प्रतिभागियों को  
प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।

दिनांक - 05-04 -2022

कोर्स की अवधि -30 घण्टे

डॉ अनीता छाबड़ा  
संयोजिका

सुश्री कांता जागलान  
सह -संयोजिका

डॉ अंजना लोहान  
प्राचार्या



Certificate Course

विषय :- हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी

समयावधि : 30 घंटे

Unit-1

सांग विधा, सांग लोकनाट्य

..

Unit 2

हरियाणा के प्रमुख सांगी, हरियाणा की सांग रचनाएँ

Unit 3

रागनी, रागनी के प्रकार

Unit 4

लोकगीत, लोक गीतों का महत्व

लोक विधा के उद्देश्य एवं महत्व:-

- भविष्य में रोजगार में सहायक।
- बच्चों में लोक कला एवं कौशल का विकास ।
- मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास ।
- लोक नाट्य सांग विधा का संरक्षण एवं विकास ।
- जीवन मूल्यों की जानकारी देना ।

S.D. MAHILA MAHAVIDYALYA, NARWANA  
 PARTICIPANT ATTENDANCE SHEET - B.A.

FROM 05.04.22 TO 24.04.22

हरियाणवी संस्कृति में योग, लोकगीत एवं राजनीति

Sr.No.	Student Name	College Roll No.	दिनांक																	दिनांक		
			5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
1	ANJU	3288220097	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
2	JYOTI	63	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
3	REENU	69	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
4	POOJA	64	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
5	MONIKA	9	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
6	POOJA	158	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
7	RITU	161	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
8	ANKITA	160	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
9	MONIKA	247	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
10	PREETI	248	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
11	MANJEET	65	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
12	SONIA	140	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
13	MANU	198	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
14	MANJEET	176	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
15	KUSUM	257	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
16	POONAM	187	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
17	MAMTA	29	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
18	AMAN	19	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
19	SUMAN	233	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
20	PREETI	2	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
21	KHUSBHU	57	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
22	MANISHA	220	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
23	POOJA	6	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
24	NEHA	38	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
25	MANISHA	225	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
26	MONIKA	5	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
27	PARVEEN	25	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
28	NISHA	90	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
29	AARTI	120	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P
30	DIVYA	173	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P	P

Handwritten signatures and names at the bottom of the page, including names like Anju, Jyoti, Reenu, Pooja, Monika, Pooja, Ritu, Ankita, Monika, Preeti, Manjeet, Sonia, Manu, Manjeet, Kusum, Poonam, Mamta, Aman, Suman, Preeti, Khusbhu, Manisha, Pooja, Neha, Manisha, Monika, Parveen, Nisha, Aarti, Divya.

हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनीसमयावधि

M.M. 50

1 ½ घण्टे

सत्र 2022-23

- 1 सांग विधा का सांस्कृतिक महत्व बताए?
- 2 हरियाणा के प्रमुख सांगियों का परिचय दे?
- 3 सांग का प्राचीन इतिहास बताएँ ।
- 4 हरियाणा के सांग मंचन पर प्रकाश डाले ।
- 5 हरियाणा के प्रमुख लोक गीतों का वर्णन करे?
- 6 पण्डित लखमी चंद के दो सांग का वर्णन करो।
- 7 मांगे राम के दो सांगो का वर्णन करे ।

11 10 x 3 = 30

5 x 4 = 20

# S.D. MAHILA MAHAVIDYALYA, NARWARA

Roll No. 2288220110 Class B.A.

Sec. ....

Subject History of India

Date 24/11/22

Signature [Signature]

(1) सांग विद्या की परंपरा :- उत्तरव के आचार पर भारतीय

रमांग के अनेक में से इरियागर्ग व उत्तरप्रदेश जाणा की एक प्रसिद्ध लोक गला है। सांस्कृतिक व धार्मिक लोक गलानें प्रचलित है सांग की उनकी गलाओं में एक है जो इरियागर्गी व उत्तरप्रदेश की ही नहीं बल्कि उत्तरीपर्वत क्षेत्रों में भी लोकप्रियता के साथ प्रचलित है सांग एक रचना सांगीत और नृत्य का अंश गला और सांग है जिस तरह गाथा भास की सांगीत और धातवुन में भीम की भवन जनमानस में नरों पैदा करती है ठीक उसी तरह सांगीत का सांगीत की भान और आत्मा पैदा करता है इस विद्या के सांग और रागिनी गला को आध्यात्मिक होने के साथ-साथ जनसमुदाय का एक मनोरंजन का साधन भी है।

रमांग के बिम्बी भी वह चहेतु एनी है या गंगाल उदा चर्चि रफी वह व सांग भव की गानकशैल्य गानकर रमांगगीती का रसपान करते है।  
युव युव से सांग, शब्द का शार्द्धिक अर्थ होता है रवाग करना यह एक लोकनाट्य के



रूप को बहुत ही पारम्परिक विद्या है जिसमें  
 लौकिककारों के अंगन द्वारा प्रचलित धार्मिक,  
 सामाजिक, पौराणिक अथवा सामाज्य - रीति -  
 लोका को आद्यम बनाकर लोककर्मियों से  
 बहुरूप धृषसुरत अंकाज से उपलब्धक की लोक  
 अनोपजन एवं जीवन श्रेयो की अनमोल  
 प्रस्तुति दिखाने जाती है

सांग संगीत की पार्श्व में चयन अर्के ध्यायन  
 की क्षमता आधार पर किया जाता है  
 और प्रत्येक पार्श्व की ध्यायन आन की

सांग संगीत विद्या एवं स्वररूप एवं क्रिया  
 गायन संगीत संगीत परामपरगत नक्षत्र एवं क्रिया  
 संगीत संगीत संगीत पर आधुनिक नक्षत्र एवं क्रिया  
 संगीत संगीत संगीत पर अंतर्गत की क्रिया गायन  
 संगीत संगीत संगीत पर अंतर्गत की क्रिया गायन  
 संगीत संगीत संगीत पर अंतर्गत की क्रिया गायन

08

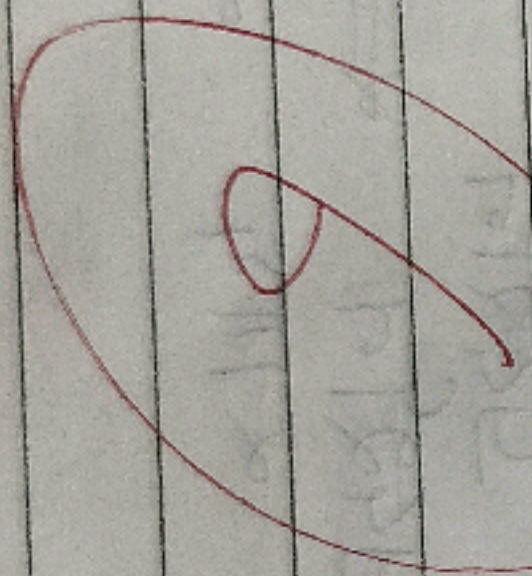
2

हम लोक  
 जाता रंग  
 रंग  
 रंग  
 रंग

(2)

एम रेशी आवा ज एम र्शांग कस्त के  
 लीकन के हिस्से ज र्शांग की उदात्त कस्त  
 गोला के विद्युत उभाव गोल कस्त  
 204 के गड 1044 या अन्य  
 204 के चालन करना आटक अरु  
 हिस्से विद्युत् ज र्शांग प्रदायन  
 उचित विद्युत् ज र्शांग ज अन्य  
 204 रक्षण-भाव के उदरघट्टा ज र्शांग  
 आधी प्रदायन के विद्युत् ज अन्य  
 204 र्शांग अथवा एम विद्युत् ज अन्य  
 204 के न. आड के र्शांग अथवा कस्त  
 कस्त के उचित उदात्त र्शांग आदि की  
 गोला के उचित उदात्त र्शांग आदि की  
 अथवा गोला के र्शांग आदि की प्रसिद्ध  
 गोला आवा है

गोला प्रकाश के जीवार्थन र्शांगरवना के  
 र्शांग के उचित उदात्त र्शांग र्शांग  
 र्शांग के उचित उदात्त र्शांग र्शांग





4

विद्यार्थियों के जीवन में  
 आगे बढ़ने के लिए  
 अलग-अलग विभागों  
 को जोड़ना और  
 उनके बीच  
 संचार को बढ़ावा  
 देना।  
 इसके लिए  
 विद्यार्थियों को  
 प्रेरित करना  
 और उनके  
 जीवन में  
 सकारात्मक  
 परिवर्तन लाना।

5

अलग-अलग विभागों  
 को जोड़ना और  
 उनके बीच  
 संचार को बढ़ावा  
 देना।  
 इसके लिए  
 विद्यार्थियों को  
 प्रेरित करना  
 और उनके  
 जीवन में  
 सकारात्मक  
 परिवर्तन लाना।

⑤ लोकगीत वे गीत हैं जिन्हें कर्क स्वयं व्याक्ति नहीं बल्कि उस संस्कृति का पूरा लोक समाज अपनाया है। सामान्यतः लोक में प्रचलित है। लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है।

हरियाणा में हर मौके पर अलग-अलग तरह के लोकगीत गाये जाते हैं जैसे कि बच्चे के जन्म पर और उनी पर, विवाह में बच्चे के जन्म में श्रावण में, तीर्था पर खेतों में काम करते हुए पनघट पर, बड़े बुजुर्गों की मृत्यु पर इत्यादि। लोकगीतों की टीम में यहाँ कुछ प्रसिद्ध लोक गीतों का विकरण हरियाणा में होने वाले परीक्षाओं का आधार पर संवर्धित है -

यह संस्कृति का पूरा लोक समाज का रूप है लोक गीत में संकलित है यह रचित एवं लोक के लिए लिखे जाते हैं।

⑥ हरि  
ल  
प

6) हरियाणा के काल्पकार प्रेम से उन्हें द्वारा दादा लखमीचन्द कहते हैं। लखमीचंद ने त्याग के पर्याय कहे जाने वाले राजा हरिश्चन्द्र पर रागनियां का किस्से के तौर पर पियारा है और उन पर रागनियां की रचना की और गाथा इसके अलावा उन्होंने भारत में वर्णित नल दमयंती के किस्से का भी रागनी के जरिए जन-जन तक पहुंचाया। यही नही भारतीय पौराणिक साहित्य में अहम स्थान रखने वाले सुत्यवान और सावित्री के प्रेम की कहानी है।

पंडित लखमीचंद की रागनियां और सांगी खार्स संवादपदक है आम लोगों तक इन्होंने छाप छोड़ी है वह वास्तव में शोष का विषय है। किन्तु प्रकार रूक लोक कला जन-2 के कठ में बसा जाती है। इस्का लखमीचंद की रचनाओं आभिलष उदाहरण है उनकी संवादपकता, हरियाणा की भाषा क्षेत्र में उनके प्रभाव और समाज में उनकी गहरी पहुंच निश्चित तौर पर शोष पर विषय है।

W

③ पांडित मांगे राम का जन्म सिसाना जिला के अंतर्गत आता हुआ कि अब सोनीपत जिले के अंतर्गत आता हुआ है। उनके पिता का नाम अमर सिंह व माता का नाम धरमा देवी था। मांगे राम के चार भाई - टीकाराम, दुकमचन्द, पंकरभान और रामचन्द्र तथा दो बहन - नौरगद और चंद्रपति थीं। पांडित मांगे राम अपने भाई बहन में सबसे बड़े थे।

मांगे राम के नाना पांडित लखमीचन्द या उदमीराम गाँव पाणवी आच्छी जमीन - जायदाद के मालिक थे। परन्तु उनकी कई संतान नही थी। इस्लामिक नाना ने पांडित मांगे राम को गौद में भी खेलाया था और वे पाणवी में रहने लगे।

मांगे राम की स्कूली शिक्षा नही हुई। परन्तु वे थोड़ा बहुत पढ़ना - लिखना जानते थे। पांडित उदमीराम धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और उनके रचनी भाजन शब्दों में व्याप्ति थी।

पुष्प



# S.D. MAHILA MAHAVIDYALAYA

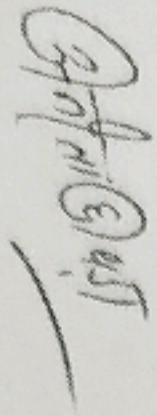
NARWANNA (JIND)

(AFFILIATED TO CH. RAMBIR SINGH UNIVERSITY, JIND)



## प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छात्रा ANJU रोल नं 3288220097 ने हिंदी विभाग द्वारा 'हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागानी' विषय में 30 घंटे की अवधि का 'सर्टिफिकेट कोर्स' उत्तीर्ण किया है। हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।



डॉ अनीता रानी  
संयोजिका



सुश्री कांता जागलान  
सहसंयोजिका



डॉ अंजना लोहान  
प्राचार्या



# S.D. MAHILA MAHAVIDYALYA

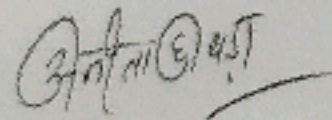
NARWANA (JIND)

(AFFILIATED TO CH. RANBIR SINGH UNIVERSITY, JIND)

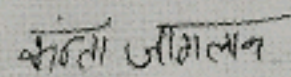


## प्रमाण पत्र

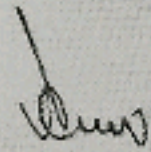
प्रमाणित किया जाता है कि छात्रा JYOTI रोल नं 3288220063 ने हिंदी विभाग द्वारा 'हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी' विषय में 30 घंटे की अवधि का 'सर्टिफिकेट कोर्स' उत्तीर्ण किया है। हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।



डॉ अनीता रानी  
संयोजिका



सुश्री कांता जागलान  
सहसंयोजिका



डॉ अंजना लोहान  
प्राचार्या

## रिपोर्ट

सनातन धर्म महिला महाविद्यालय में 24/04/2022 को हिन्दी विभाग द्वारा सर्टिफिकेट कोर्स का समापन कराया गया। कोर्स का नाम "हरियाणवी संस्कृति में सांग लोकगीत एवं रागनी" था। इस कोर्स का आरम्भ 05/04/22 को कराया गया। इस कोर्स की अवधि 30 घंटे की है। हिन्दी विभाग की प्रकृता डॉ० अनीता दाबड़ा व कांगा जगजान ने विद्यार्थियों को हरियाणवी संस्कृति का परिचय देते हुए सांग व रागनी के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर प्राध्यापिका डॉ० अंजना लोहान ने भी छात्रों को मार्गदर्शन किया। कोर्स के समापन पर छात्रों को सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।